युवा क्लारा बार्टन

युद्ध के मैदान में नर्स

क्लारा बार्टन एक बहादुर महिला थी। उसने गृह-युद्ध के दौरान घायल सैनिकों की देखभाल की और उन्हें दवा दी। उसने अमेरिकन रेड-क्रॉस भी शुरू किया। रेड-क्रॉस एक ऐसा समूह है जो ज़रूरत में लोगों की मदद करता है।

क्लेरिसा हारलो बार्टन 25 दिसंबर, 1821 को मैसाचुसेट्स में पैदा हुई। सभी उसे क्लारा बुलाते थे।

वो परिवार में सबसे छोटी थी। क्लारा की दो बहनें और दो भाई थे।

पिता द्वारा सुनाई कहानियां सुनाने में क्लारा को बहुत मज़ा आता था। उसके पिता एक सैनिक थे और उनके पास रोमांचक अनुभवों का एक खज़ाना था।

जल्द ही क्लारा ने स्कूल शुरू जाना शुरू किया। उनके शहर में केवल एक ही स्कूल था, जिसमें केवल एक कमरा था। क्लारा पढ़ाई में तेज़ थी।

क्लारा का पसंदीदा विषय भूगोल था।

उसे नक्शों को देखना बहुत अच्छा लगता था।

क्लारा शर्मीली थी।

उसके लिए दोस्त बनाना कठिन था।

लेकिन जब लोगों को मदद की ज़रूरत होती, तो वो बिल्कुल नहीं शर्माती थी। जब वो 11 साल की थी, तो उसका भाई खलिहान की छत से गिर गया और बुरी तरह से ज़ख़्मी हो गया। क्लारा उसकी नर्स थी और उसने दो साल तक अपने भाई की तीमारदारी की।

जब वो 17 साल की थी, तो क्लारा ने अन्य बच्चों को सीखने में मदद करने का फैसला किया। उसके लिए वो टीचर बनी।
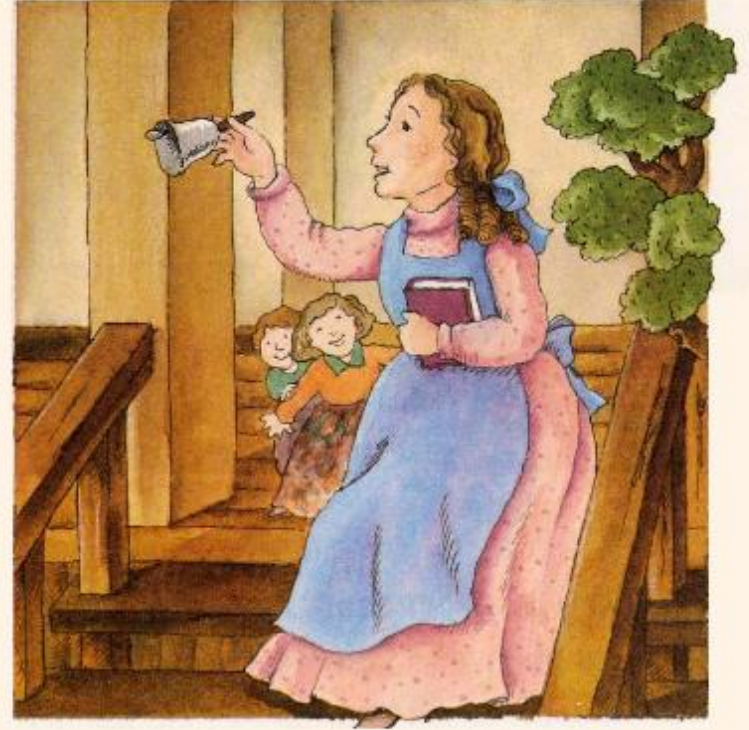
क्लारा के कुछ छात्र लगभग उसकी उम्र के ही थे। लेकिन वो एक अच्छी शिक्षिका थी और उसके सभी छात्र उससे प्यार करते थे।

वो 18 साल तक एक टीचर रही। फिर,1854 में, क्लारा वाशिंगटन डीसी चली गई। वहां यूनाइटेड स्टेट्स पेटेंट ऑफिस में, वो पहली महिला क्लर्क बनीं।

उस समय दक्षिणी राज्यों में गुलामी मौजूद थी लेकिन अधिकांश उत्तरी राज्यों में दासता नहीं थी। क्या गुलामी की अनुमति दी जानी चाहिए? इस पर लोगों में कोई सहमति नहीं थी।

देश गुलामी को लेकर विभाजित था। फिर 1861 में, उत्तर और दक्षिण के बीच गृह-युद्ध शुरू हुआ। दोनों ओर युवा लोगों ने अपनी मर्ज़ी से लड़ाई लड़ी।

तब भयानक लड़ाइयाँ हुईं। कई सैनिक आहत हुए या मारे गए। क्लारा उनकी मदद करना चाहती थी।

वर्षों पहले अपने भाई की देखभाल करने की बात उसे याद आई। वह जानती थी कि वह घायल सैनिकों की अच्छी देखभाल कर पायेगी।
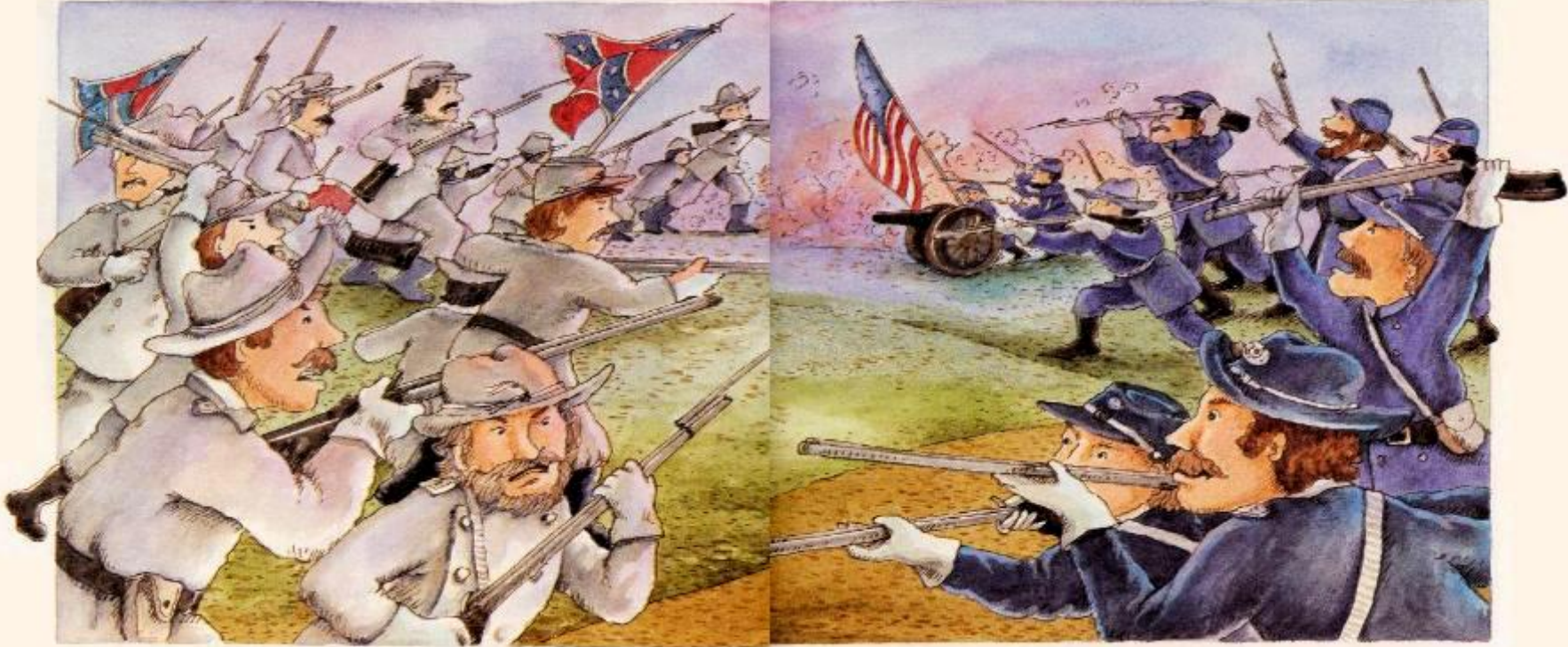
क्लारा नक्शे पढ़ने में अच्छी थी। उसने युद्ध के मैदान के नक्शों को याद किया ताकि वो उन सैनिकों को खोज सके जिन्हें मदद की ज़रूरत थी।

वो युद्ध के मैदान में जाने से डरी नहीं। सैनिक, उत्तर के लिए या दक्षिण किसके लिए लड़ रहे थे, उसकी उसे कोई परवाह नहीं थी। वह बस उनके इलाज में अपनी मदद देना चाहती थी।

क्लारा, सैनिकों तक दवा लाई और उसने उनके घावों की मल्हम-पट्टी की। बहादुरी और देखभाल से उसने कई लोगों की जानें बचाईं।

सैनिकों की देखभाल में बहुत पैसा खर्च होता था। सैनिकों की मदद करने के लिए क्लारा को, दूसरे लोगों की मदद मदद की ज़रूरत थी।

क्लारा अभी भी शर्मीली थी, लेकिन पैसे जुटाने की जरूरत ने उसे निर्भीक बनाया। उसने हर जगह जाकर लोगों से मदद की गुहार की। घायल सैनिकों के लिए पट्टियाँ, दवा, भोजन, कपड़े, साबुन, तौलिया आदि सामान खरीदने के लिए उसे धन की आवश्यकता थी।

पूरे देश में लोगों ने क्लारा के बारे में सुन रखा था। उन्होंने उसके अच्छे काम के कारण उसे "युद्ध के मैदान की परी" का खिताब दिया।

आखिरकार, 1865 में, गृह युद्ध समाप्त हुआ! लेकिन क्लारा को अभी भी बहुत काम करना बाकी था।

राष्ट्रपति लिंकन ने क्लारा से पूछा कि क्या वो लापता सैनिकों की तलाश करने में उनकी मदद कर सकती थी। क्लारा ने वो काम ख़ुशी-ख़ुशी किया।
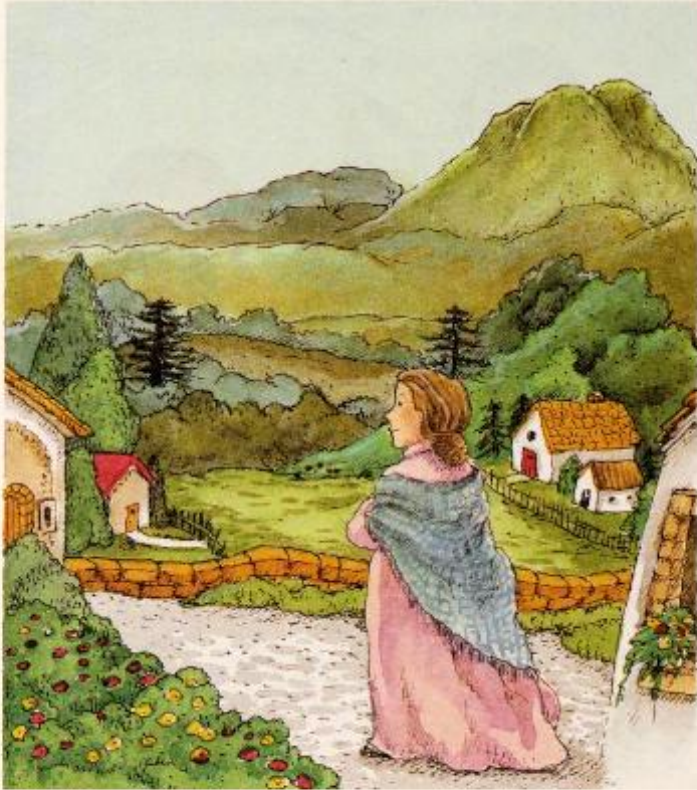
इस तरह चार साल बीते। फिर क्लारा को आराम की ज़रूरत थी। तब उसने स्विटजरलैंड जाने का फैसला किया।

जबकि क्लारा यूरोप में थी तब, फ्रेंको-प्रशियन युद्ध छिड़ गया। उसने यूरोपीय सैनिकों की भी वैसे ही मदद की जैसे उसने अमेरिकी सैनिकों की मदद की थी।
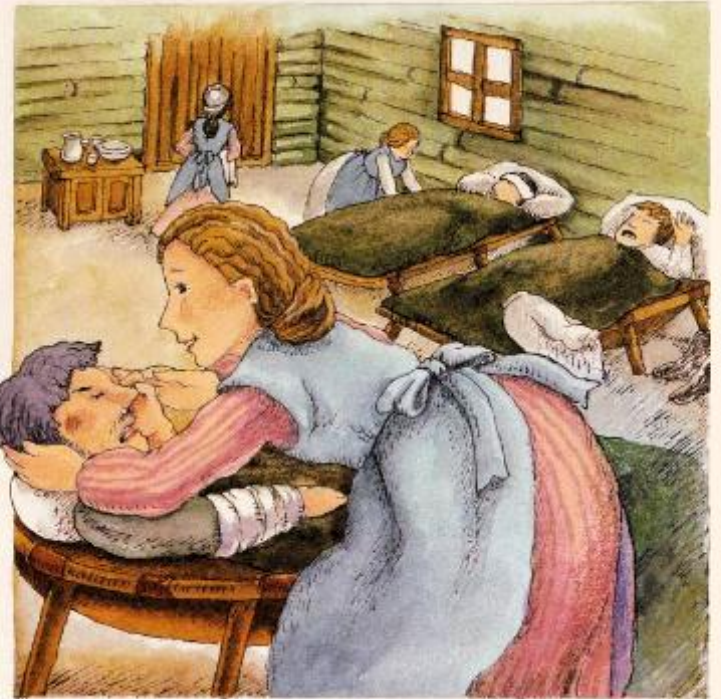
स्विट्जरलैंड में क्लारा ने रेड-क्रॉस की अंतर्राष्ट्रीय समिति से मुलाकात की। यह ग्रुप जरूरत में लोगों की मदद करता था। क्लारा को लगा कि अमेरिका को भी रेड-क्रॉस की सख्त जरूरत थी।

इसलिए, 1881 में, अमेरिका वापस आने के बाद, क्लारा ने अमेरिकन रेड-क्रॉस की शुरुआत की। उसमें कई लोग शामिल हुए। क्लारा ने उन्हें वह सब कुछ सिखाया जो वह दूसरों की मदद करने के बारे में जानती थी।
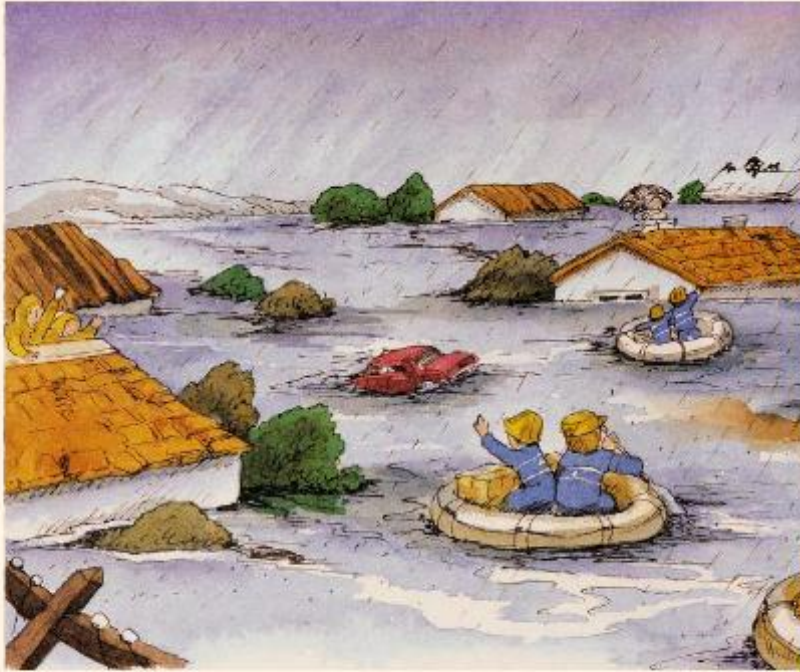
जब तूफान, बाढ़ और अन्य आपदाएं आती हैं, तो अमेरिकी रेड-क्रॉस हमेशा लोगों की मदद के लिए तैयार रहता है।
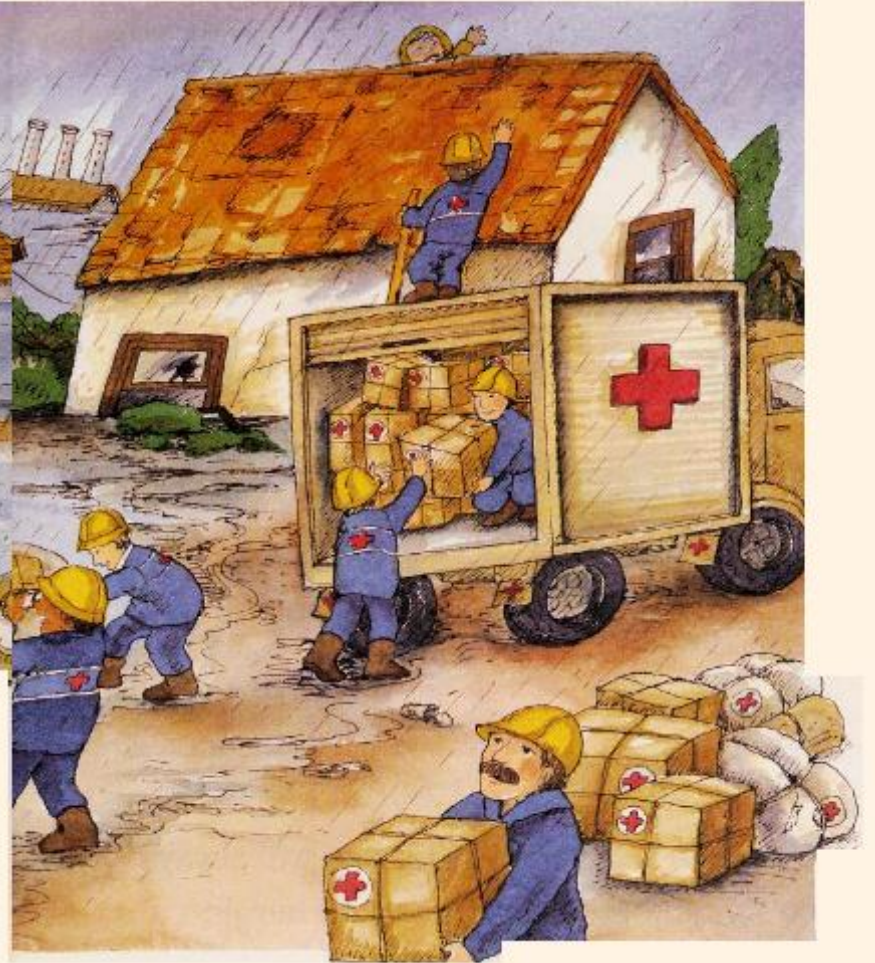
1912 में, क्लारा बार्टन का निधन हो गया। वह युद्ध में और शांति में हमेशा एक बहादुर और वीर महिला के रूप में याद की जाएंगी।

समाप्त